

सतगुरु संदेश

जब रहे आप अनाम अमाया । आपही में रहे आप समाया । ।
मौज उठी एक धुन भई भारी । सत्तनाम सत शब्द पुकारी । ।
प्रथम करता आप सत, बीज वृक्ष तिह माहिं ।
ताहि लग्यै कोई सन्त जन, सब संसा भिट जाहि । ।
नाम सनेही होय, काग करम गति पर हरै ।
मन बांछित फल पाय, हंस होय सतगुरु मिलै । ।
सतगुरु के उपदेश, सत्तनाम निज सार है ।
सोई मुक्ति सन्देश, सुनौ सन्त सत भाव सै । ।
सत्त लोक की अकथ कहानी । सोई निज सतगुरु सहदानी । ।
रूप वरन नाही जिह देशा । तिनका अचरज सुनौ संदेशा । ।
नहीं तहाँ पांच तत्व की काया । नहीं तह सत्त पुरुष निरमाया । ।
नहीं प्रकृति पचीसौ होई । जरा मरन व्यापै नहीं कोई । ।
दस इन्द्री नाही षट करमा । वरन भेद नाही कुल धर्मा । ।
दिवस न रजनी चन्द्र न सूर । विमल प्रकाश सकल विधि पूरा । ।
निरगुन सरगुन तौ नहीं कोई । शब्द सरूपी सकल समोई । ।
शब्द सरूपी सतगुरु जिसका आदि न अन्त ।
काया मही अग्र है निश्चय मानौ सन्त । । साखी
सोई शब्द प्रमाण, अनहद बानी जो उठै ।
और झूठ सन जान, सतगुरु कहत विचार कै । । सोरठा
सुनौ सन्देशा सुरति सनेही । कहूँ सन्देशा अभिचल देही । ।
जुग अनन्त हम जाय पुकारा । किन्हूँ न माना शब्द हमारा । ।
सब जुग त्रिदेवन पै बीता । काहूँ न हमरी गही परतीता । ।
जप तप जग सबहुँन ठहिरावा । काहूँ न खोज शब्द को पावा । ।
कलजुग एकौ ठीक न होई । विन सतनाम तैरै नहीं कोई । ।
तीरथ व्रत में सब जग लागा । कवहूँ न मन का धोख्रा भागा । ।
जानौ संकट कवहूँ न छूटै । पकड़ पकड़ जम सबकौ लूटै । । (जम अर्थात् शोषक पुरोहित)
धोख्रे में जग पचमुआँ नहीं आया थिथ ग्यान ।
सतगुरु शब्द पुकारिया बहिरा सुनै न कान । ।
विन सतगुरु उपदेश, सुर नर मुनि नहीं निसतिरै ।
ब्रह्मा विशन महेश, और सकल कौ को गिनै । ।
भरम भरम मुआँ संसारा । विरलै काहूँ तत्व विचारा ।
जग में बहु गुरु जो भयऊ । स्वर्ग आस तै नरकै गयऊ । ।
सबै सिख प्रकृति में दीना । अपने गुण ते सार न चीन्हा । ।
ताहि कहत मैं भव जल पारा । एकहूँ जीव न होत उवारा ।

बुड़ मरै भव जल के माहीं । आत्म ज्ञान विचारा नाहीं । ।
 राम कहत मुआँ संसारा । आत्म ब्रह्म न ताहि विचारा । ।
 बूझूं ताहि त्रिभूवन न सूझै । गहिरी बानी विरला बूझै । ।
 खोंट कपट गुन पर हरै, सतगुरु कहैं समझाय ।
 विन सतगुरु पावै नहीं, कोटिक करहु उपाय । ।
 करौ छाड़ कुल लाज, सतगुरु के उपदेश सै ।
 होय जीव का काज, सांच कहैं परतीत कर । ।
 बहुतक ग्रन्थ कथा पद्य साखी । जीव काज अखरौटी भाखी । ।
 अगम निगम बहु संधि समोधा । एक शब्द ते जाय प्रमोधा । ।
 शब्द स्वरूपी शब्द सनेही । सत नाम की महिमा यही । ।
 नाम बिना संशय नहीं जाई । संशा मिटै जब नाम समाई । ।
 सब जग तज जो होय निनारा । सो पावै निज शब्द हमारा । ।
 शब्द गहै तज जग की आशा । नेहचे कर मानौ सत भाषा । ।
 निज घर जाय बहुर नहीं आवै । मन बच कर्म नाम ही पावै । ।
 अक्षय वृक्ष की डोर है, जो सत नामहि पाय ।
 सत शब्द परमान है, जो सत्त लोकहि पाय । ।
 कहै हंस पति सोय, हंस राज मम बात सुन ।
 जीव काज जेहि होय, सोई देहु सिखाय तुम । ।
 काया ते आगर जो होई । तामैं राखौ सुरत समोई । ।
 अक्षर नाम मूल जो आही । जाके बूझे जुग निरवाही । ।
 धन्य भाग जो मूलहि पाया । मूलहि ते परलै निरवाहा । ।
 मूलहि सार और सब ज्ञाना । सोई सतगुरु मूल बखाना । ।
 सतगुरु दया ते अक्षर पाया । अक्षर ते हंसा थिर रहाया । । (अक्षर अर्थात् शब्द)
 मूल अक्षर सतगुरु ते पाई । विन अक्षर सब जाय नसाई । ।
 आदि अन्त जिन अक्षर चीन्हा । तिन सत लोक पयाना दीन्हा । ।
 आदि अक्षर जो अगम है, जाका यह विस्तार ।
 सतगुरु दया ते पाइयै, सत्तनाम निज सार । ।
 करै विचार विवेक, जो जासे जीव निस्तरै ।
 सत्तनाम की टेक, और सबै धन धाम है । ।
 षट कर्म तजौ नाम तै जानी । सुनहु संत सत्त मुख बानी । ।
 अजपा जाप जपै मन लाई । जाके जपते मिटै दुचित्ताई । ।
 तत्त सार चीन्है नर लोई । सब घट थाप रहा है सोई । ।
 चीन्है ताहि जीव अन्सारै । विन रसना जो शब्द उचारै । ।
 मन पवना संग निस दिन धावै । सो प्रानी बहु सुध बिसरावै । ।
 धन्य सेवक जो औसर मारै । साहिब पूरा सेव न टारै । ।
 सत्तनाम सै सुरत लगावै । सो सेवक सतगुरु मन भावै । ।

तिमिर आतमा जब लगै, जब लग सूर उगाय ।
सत्त शब्द के जानते, कर्म भर्म मिट जाय । ।
काहे करुं समाज, कर्म भिक्षुक सुभाव है ।
सहजहि पावै राज, जो गढ़ का भेदी मिलै । ।
गुरु गम ज्ञानी जो कोई पावै । आवा गवन सबै विसरावै । ।
ज्ञानी होय जो सतगुरु भेटै । सतगुरु मिलै जो संशा भेटै । ।
गुरु प्रताप सबै कछु बुझै । गुरु की दया अगम की सूझै । ।
षट दरशन सब गये भुलाई । गुरु बिन बाट न काहू पाई । ।
सतगुरु मिलै तौ बाट बतावैं । औघट घाटी लै पहुँचावै । ।
देही का गुर सबहुँ न कीना । सतगुरु रूप न काहू चीन्हा । ।
करम बहुत देही का करई । मन का खोज करै जब तिरही । ।
तन की क्रिया छांड़ दे, मन का करौ विचार ।
मन चीन्हे बिन थित नहीं, सतगुरु कहैं पुकार । ।
सतगुरु खोजौ संत, जीव काज जो चाहिये ।
भेटौ भव जल अंत, आवा गवन निवारहु । ।
घट घट पूरन है सब माहीं । है घट में घट की सुधि नाहीं । ।
निकट अहै न करो विचारा । मृग रूप दूढ़ै बन जारा । ।
जनम अनेक जो गये निरासी । थित पावै ना मिटै चौरासी । ।
किरतम कौ सबहुन सत माना । सार शब्द का मरम न जाना । ।
जब लग सार शब्द नहीं खूटै । चौरासी कैसे कर छूटै । ।
सतगुरु मिलै तौ करम नसाई । बन सतगुरु संशा नहीं जाई । ।
निस बासर जो शब्दै भेटै । तौ या काल फांस कौ भेटै । ।
जंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमौ जो कोई ।
सत्त शब्द जाने बिना, काग हंस नहीं होय । ।
पतिव्रता नहीं होय, जो पति तज औ रै रची ।
बहु निन्दा जग होय, दूजे पति सौं वे मुखी । ।
निश्चय कर सतगुरु यह भाषा । मूलहिं तैं जितने सब शाखा । ।
नाम गहौ तज जग की आशा । नाम बिना जग गयो निराशा । ।
तिर आंखन ते मुख है यही । सतगुरु मिलि हैं शब्द सनेही । ।
करम भरम तजि कुल सौ दूटै । चौरासी का बन्धन छूटै । ।
नाम विहूना सब पचिहारा । काल के मुख में सब ही डारा । ।
नाम जपे बिन कछू न होई । सब में व्यापै न्यारा सोई । ।
नाम सनेही जग सै न्यारा । ज्यों जल माहीं रहे पनिहारा । ।
सतगुरु का उपदेश है, जो सत्त नाम समाय ।
सत्त शब्द खाली नहीं निश्चय घर कौ जाय । ।
बिनवै दोऊ कर जोर, सतगुरु बन्दी छोर है ।

गहै नाम की डोर, जरा मरन का भव मिटै । ।
 चिन्ता चाप खेलौ चौगाना । यही गोय यही मैदाना । ।
 अगम निगम दुइ हाल जनावै । मही की गोय गगन पहुँचावै । ।
 चीन्ह रहै बिरहै सब जानै । दुतिया भाव न हिरदे आनै । ।
 रूचा सोई जित अनहद चाखा । और सबै फीकी अभिलाषा । ।
 अनभै सौ संशा मिट जाई । अनभै घर में जाय समाई । ।
 गुरु मिल शब्द ववेषी होई । शब्द बिना जुग जाप विगोई । ।
 ज्ञान बिना कछु मुक्ति न पावै । ज्ञानी होय सोई अथवि । ।
 पंडित पढ़ गुन पच मुआ, ना पाया गुर ज्ञान ।
 बिना ज्ञान नहीं मुक्ति है, सत्त शब्द परमान । ।
 ज्ञानी सुनौ संदेश, तीन लोक ते बाहिरै ।
 तहों मुक्तिपुर देश, शब्द ववेषी पेखि हैं । ।
 क्षर माही अक्षर सत नामा । क्षर माही निह अक्षर जाना । ।
 पंडित हुई अक्षर नहीं चीन्हा । सो पंडित है काल अधीना । ।
 पंडित सो जिन अक्षर जाना । अक्षर सब भाषा परवाना । ।
 अक्षर मूल और है डारा । विन अक्षर नहीं मन पतियारा । ।
 एक अक्षर का नाम जो पावै । जौनी संकट बहुरि न आवै । ।
 अक्षर होय सो अक्षर जानै । अक्षर लोक का भेद बखानै । ।
 अक्षय वृक्ष अक्षर सों पावै । सुरत डोर हंसा चढ़ि जावै । ।
 अक्षय होई अक्षर गहै, अक्षर है उपदेश ।
 अक्षई डोर चढ़ जाइये, अक्षय राज के देश । ।
 अक्षर है परमान, सतगुरु कहैं पुकार के ।
 मिलै मुक्ति फल दान, सतगुरु वचन प्रमाण है । ।
 जीव काज हुई यह तै लागै । जो कोई कुल लाजहि त्यागै । ।
 सुर नर मुनि सब गण पचिहारे । मुक्ति भेद किनहुँ न लग्यारे । ।
 जगत माहि संशै अति परहू । सब जीवन मिल करना करहू । ।
 कहा भेदी जो भेद बतावै । सतगुरु सौ जो नाम सुनावै । ।
 जिहि तै जियरा निज घर जाई । चौरासी भर में नहीं आई । ।
 जब सतगुरु मिल कीन्ह विचारा । जीव काज जग आय पुकारा । ।
 सत्त नाम भाषा परवाना । जो पावै सो दहि पयाना । ।
 सत्त शब्द निज जान कै, जिन कीनी परतीत ।
 काग कर्म तज हंस हुई, चला सो भव जल जीत । ।
 कब छूटै जंजाल, बहु बंधन जग बांधिया ।
 काटै दीनदयाल करम फंद एक नाम तै । ।
 झन झनकार अनहद है ज्योंहि । सुरत सनेही पहुँचै त्योंहि । ।
 और कछु नहीं सुनै न भाषै । उन मुन साध अमीरस चाखै । ।

मन थिर रहै न एकौ बातें । जब जानै जब अनहद रातें । ।
जहाँ लग जग में बाजा होई । अनहद माहि सुनै सब सोई । ।
सुरत सै देखौ निरत अखारा । सतगुरु सत्त सै होत है सारा । ।
कुलफ खोल घर सुरत लगावै । सो घर सतगुरु आन दिखावै । ।
ज्ञानी है कोई सुरत सनेही । भेद बखानै अभिचल देही । ।
विद्या ते निरबारा रहै, कोई न पावै भेद ।
काहे को जप तप करै, पढ़ै शास्त्र वेद । ।
मन जब गगन समाध धुन, सुन कै जब मन गह्यो ।
नहीं आवै नहीं जाय, सुनै शब्द थित हुई रहै । ।
न्यारा कोई जगत सै होई । सत करता को जानै सोई । ।
रैचक पूरक कोई कोई जानै । कुम्भक विरला भेद बखानै । ।
इंगला पिंगला करै विवेषा । सुष्मन कोई कोई विरले पेसा । ।
मन पवना निस दिन भरमावै । बाहर भीतर थित नहीं पावै । ।
कर्म अनेक जोग का करई । जुगत बिना जीव नरकै परई । ।
सहज जोग जिन शब्दै पाया । सहजै तै मन गगन चढ़ाया । ।
सो जोगेश्वर मन कौ चीना । मन चीन्हे विन जोग अधीना । ।
शब्द खोज मन बस करै, सहज जोग है येह ।
सत्तनाम निज सार है नातर छूटै देह । ।
सत्तनाम निज सोय, जो सतगुरु दाया करैं ।
और झूठ सब होय, काहे को भरमत फिरै । ।
कुल सै टूट नाम सै लागै । मन बच कर्म होय वैरागै । ।
कुल टूटै जब सतगुरु भेटै । जो संशा उपजै सोई भेटै । ।
नौका है पर खेवट नाही । भवसागर कैसे तिर जाही । ।
भवसागर बड़ संकट होई । बिना नाव डूबै सब कोई । ।
सत्तनाम भव तारन करिहैं । जाके जाने जीव निस्तरि हैं । ।
नाम गहै सो थकै न हारै । सतगुरु खेब उतारे पारै । ।
नाम गहै जो जुगत जनावै । मिथ्या जग को नाम गमावै । ।
एक नाम को जान कै, भेट करम के अंक ।
तबहि तौ सत पाइहौ, जब जीव होय निशंक । ।
आपा डारै खोय, ज्यों पानी हुई रंग मिलै ।
ताहि सरीपा होय, जात वरन कुल छाड़िके । ।
सांचा कर सत नाम हि जानै । सतगुरु वचन सत्त कर मानै । ।
सतगुरु कहैं सोई पै करई । गुरु की आज्ञा सै निस्तरई । ।
सत्त वचन सतगुरु की भाषा । सतगुरु भेटै सब अभिलाषा । ।
निस वासर सत सै लौ लावै । सतगुरु दया ते नामहि पावै । ।
जाकौ मिलै शब्द सहदानी । जिन सतगुरु की महिमा जानी । ।

जाकै सतगुरु की परतीती । निर्भय हुई जिन भव जल जीति । ।
धन सतगुरु जिन नाम बताया । भव जल तै सत लोक दिखाया । ।
मूल ध्यान गुरु रूप है, मूल पूज गुरु पांव ।
मूल नाम गुरु वचन है, सत्त मूल सत भाव । ।
गुरु जश निशदिन गाउ, गुरु जश दिक्षा तहॉ कही ।
गुरु ते मिल के धाव, तव आगे की गम करै । ।
डर धरम राई का बहुत बड़ा है । जिहि सेती सब जग डरता है । ।
तिहि डर तीनौ लोक डराई । जरा मरन चौरासी जाई । ।
पंडित पढ़ पढ़ वेद बखानै । गुन तीनौ की असतुत ठानै । ।
सोई चाल संसार चलावै । करम भरम बहु भॉति डिढ़ावै । ।
सरगुन में संसार भुलाना । निरगुन का उन मरम न जाना । ।
अरथ विचार पढ़ै पढ़ गीता । भई नहीं सतगुरु परतीता । ।
देही धर सतनाम न पाया । कैसे छूटै जम की राया । ।
गुरु की शरन न आवई, फिर फिर होय अकाज ।
जीव वहाँ हुई बंचई, काल तिहुँ पुर राज । ।
जो सतनाम समाव, सतगुरु की परतीत कर ।
जम का छूटै दांव, हंस जाय सतलोक में । ।
ताहि जाई मंदिल यह कांचा । जब तौ जीव कहाँ हुई बांचा । ।
परचै नाहि शब्द सों करई । कैसे कर भव सागर तरहि । ।
जिन तौ मंदिल खोज जो कीन्हा । इन्दी साधन आतम चीन्हा । ।
शब्द आदि का नाहीं पेखै । रेख बरन को सब कोई देखै । ।
जो सतलोक पयाना धरई । तिहि सरीखा आप जो करई । ।
जिन नहीं तन मन शब्द समोया । तिन सब जनम अकारथ खोया । ।
ज्ञान रतन की द्रिष्ट जो होई । आदि द्रिष्ट पुन देखै सोई । ।
शब्द सार जाने बिना, जिय परलै में जाय ।
काया माया थिर नहीं, शब्द लेहु अरथाय । ।
शब्द काया में सार, और सकल विस्तार है ।
ज्ञानी करौ विचार, सत्त शब्द सै पाइया । ।
ना ऐसा राज और है केरी । पावै शब्द कटै तौ बेरी । ।
जो कोई आश मुक्ति को चाहै । सो सतगुरु आज्ञा निरवाहै । ।
सुर नर गरभ मुये संसारा । काहू न सतगुरु मरम विचारा । ।
केते देव दैत आराधै । करम करै और इन्दी साधै । ।
देव फंद जम जाल है ऐसा । सो तौ जग सै छूटै कैसा । ।
मत कोई भटक मरौ यह बाटा । धरती सुरग बीच यह ठाठा । ।
सत का मारग शब्द बतावै । गुरु मुख होय सो मारग पावै । ।

करम फंद जग फंदिया, जप तप पूजा दान ।
जौन शब्द मुक्ति है, सो न पड़े पहिचान । ।
तिरै जो नाम समाय, बिन थित जग बहु बूड़िया ।
शब्द न कहै दूराय, सतगुरु के सत भाव है । ।
निशदिन सतगुरु शब्द पुकारै । पंडित सतगुरु नहीं विचारै । ।
तत्व सार चीन्हौ नर लोई । किरतम सब जग गया विगोई । ।
झूठा धोख्रा सब पतियाई । सत शब्द हिरदे न समाई । ।
जग में बाजी कला पसारा । जग भरमा वाजी विस्तारा । ।
सरद चांदनी में चित्त लाई । बिन धौंका सजोग भुलाई । ।
बाजी जबै दिष्ट में आवै । जब सतगुरु तत्व सार बतावै । ।
सुमरन सार जो है तत्व सारा । और सबै पाखंड पसारा । ।
सतजुग द्वापर त्रेता तांई, और कलजुग उनमान ।
सत्त नाम तत्व सार है, और सब झूठा जान । ।
तत्व दरसा कोई होय, सो तत्व सार विचारही ।
बूझै तत्व बिलौइ, सतगुरु का चेला सही । ।
थित सोई जो सतगुरु भांषा । और सबै झूठी अभिलाषा । ।
थित पावै जब मन थित होई । बिन थित सो नर गये विगोई । ।
काहू न खोज कीन्ह थित केरा । चौरासी सब कीन्ह बसेरा । ।
जप तप तीरथ वरत भुलाना । काहू थित का मर्म न जाना । ।
सब जग धोखे कौ पतियाई । सो धोख्रा सुपना हो जाई । ।
विद्या नहीं जो सतगुरु भांषें । सब जग विद्या कौ अभिलाषै । ।
पंडित वेद पढ़े पढ़ मरई । बुध ठगाय थित नहीं धरई । ।
थित शब्द मानै नहीं, जिन्हें गिरासै काल ।
भरमा थित पावै नहीं, क्यों छूटै भर्म जाल । ।
जग भवसागर मांहि, जीव कहौ कैसे तिरै ।
गहै जो सतगुरु बांह, ज्यों जल थल रक्षा करै । ।
दरपन मांझै निस दिन जैसा । रूप रेखा कोन न रेसा । ।
शब्द के मंजन निरमल होई । निस वासर जो तत्व विलोई । ।
पल पल छिन छिन शब्द विचारै । शब्द स्वरूपी दया निहारै । ।
मांजत रहै लगै नहीं काई । दरशन देखै मन पतियाई । ।
ना देखे दरशन का भाऊ । तौ या दरपन कौ पतियाऊ । ।
दरपन है दरशन का साजा । पांच तत्व का कर उपराजा । ।
निरख परख दरशन के रेखा । शब्द विलोई जो दरशन पेखा । ।
सत्त शब्द निज सार है, नातर झूठी देह ।
दरशन देखै मांज कै, दरपन लोहा एक । ।

शब्द स्वरूपी भौन, शब्द सुरत बासा जहां ।
पूर रहा मन, विमल दरश देखे बनै । ।
ध्यानी कोई जो ध्यान लगावै । तन बिच महा कौ तांहि लै आवै । ।
शब्द सुरत दोऊ सम कर मेलै । मही को खेल गगन में खेलै । ।
ज्ञान की सूली मनहि चढ़ावै । सुरत विचार कै ऊँचे लावै । ।
निस दिन राखै तत्व विचारा । सतगुरु आवा गवन निवारा । ।
बाहिर का भीतर लै राखै । अगम निगम का भेद जो भाखै । ।
जिन देह गढ़ी जाकी लौ लावै । जब छूटै तब तहां समावै । ।
ज्ञान जुगत कौ ध्यान जो धरई । सो जुगती भव सागर तिरई । ।
शब्द खोज निह शब्द हुई, लग्यै जो तत्व विचार ।
सतगुरु शब्द पुकारई, करनी करै सो सार । ।
शब्द गहै गुर ज्ञान, मूल ध्यान सतगुरु कहैं ।
सोई संत सुजान, शब्द विवेपी हुइ रहै । ।
निस्तारा सत नाम सै होई । बिना नाम जुग बचै न कोई । ।
सुर नर सब षट कर्म भुलाने । निह कर्म हुइ निह नाम समाने । ।
फिर फिर करम बंध सो होई । नाम बिना नहीं छूटै कोई । ।
बहुतक ऐसे भये उदासी । नाम बिना नहीं छूटै चौरासी । ।
नाम बिना तौ जम लै जाई । नाम बिना बहु देह धराई । ।
जौनी संकट फिर फिर परई । साँच बचे धन धामै धरई । ।
बिरले भये नाम अनुरागी । जिन की सुरत गगन में लागी । ।
कोई न जम सै बच सकै, नाम बिना जम खाय ।
सोजन बिरही नाम के, जिन कौ देख डराय । ।
मितै कर्म के अंक, जो सत्त नामै धावहीं ।
तब होय जीव निसंक, सत वचन सतगुरु कहैं । ।
परवानी कोई पावै वीरा । होय हंस तज काग सरीरा । ।
तब ही मितैं करम के अंका । जब सब सतगुरु गहै निसंका । ।
निज परतीत करौ परवानी । नातर हुइ है नरक निदानी । ।
सतगुर मिलै दया निध पावै । निज थित होय बहुरि नहीं आवै । ।
जिस देखत जम करै सलामा । निज परवान मुहर सत नामा । ।
बाट बाट जम रोके नहीं । मुहर देख कै सीस चढ़ाई । ।
बिना नाम नहीं निस्तारा । सत्त नाम तैं होई उवारा । ।
नर नारी और बालिका, यही ठीक परवान ।
जिन सत लोकै पाय है, यह तू निज करजाना । ।
बिन वीरा निज सार, जीव नहीं भव जल तिरै ।
सो तुम करौ विचार, सतगुरु मिलै तौ पावई । ।

जम का फंदा काटै करता । जो सत नामै निस दिन रटता । ।
यह पंसी है जम की फांसी । सुर नर मुनि फंदे चौरासी । ।
तीन लोक जम जाल पसारा । तामै उरझा य संसारा । ।
मृत लोक पाताल अकाशा । जनम जनम सहसी जम त्रासा । ।
सत्त शब्द परतीत न होई । ऐसै ही सब गये विगोई । ।
चौथे लोक कै जब सुध पाई । जब सतगुरू सत नाम बताई । ।
मन बच कर्म जो नामहि लागै । जरा मरन भरम भौ भागै । ।
करम करै देही धरै, और फिर फिर पछताइ ।
नाम बिना बंचे नहीं, जीवै जम लै जाइ । ।
गाढ़ा जम का फंद, या फंदे जग फंदिया ।
काटै तौ होइ अनंद, नाम खड़ग सतगुरू दिया । ।
बानी गहिरी साधू बोलै । गहिरा होय सो उन मुन खोलै । ।
इंगला पिंगला मध्यम रहई । सुषमन तत्व जान कै गहई । ।
जब लग कीट भगत विसरावै । जब लग भ्रिंगी निकट न आवै । ।
त्रिकुटी मध्य सुरत संचरई । उन मुन पवना कौ करई । ।
कूची कर गहि खोलै तारा । अनहद नाद सुनै भनकारा । ।
सुन धुन गुर मुख देखै नैना । मन परतीत होय गुर बैना । ।
धुन के सुने आतमा जागै । अनमै तारी सहजै लागै । ।
अगम अगोचर पैठ कै, देखै तत्व विलोई ।
बानी तहां निशान है, समरथ साँचा सोई । ।
जग में बहु परपंच, जामे जग भुला सबै ।
ना पावै कोई संच, सत्त शब्द जाने बिना । ।
भव जल जबही उतरै पारा । जब मिलसी सतगुरू कड़िहारा । ।
बिन कड़िहार न भव जल तिरही । बूडै फिर फिर देही धरई । ।
जिन तौ खोज लीन कड़िहारा । नाम जहाज चढ़ भयो पारा । ।
गुर प्रताप जो भव जल छाड़ै । सुरत की धजा सुंन में माड़ै । ।
अनहद नांद निसान बजावै । अटल होय फिर नर्क न आवै । ।
सतगुरू मिलै सत नाम समाई । भव जल तै सत लोकै जाई । ।
भव जल के विसरे सब साजा । सुख सागर विलसै सुख राजा । ।
सतगुरू का विश्वास कर, तजौ लोक की लाज ।
भव जल पार जो होय तू, चढ़ सत्त नाम जहाजा । ।
भव जल बहुत अथाह, अति औगाह असूझ है ।
बूड़ा सब संसार, बिन परचे कड़िहार के । ।
मन मकरंद अस आहि वहेला । धरती रहै सुरग में खेला । ।
जिहि खोजत सुर नर मुनि थाके । एकै खेल न जानै वाके । ।
जिहि ते भये दसौ औतारा । सो बहु भांत भयो संसारा । ।

पल में दस अनेक जो होई । निह कितहूँ थित रहै समोई । ।
 जिनका ऐसा सकल पसारा । किनहूँ न उन का रूप निहारा । ।
 पांच तत्व दस इंद्रि संगी । उपजै बिनसै नाना रंगा । ।
 तिहि धोग्घे जग जाइ भुलाई । जब चीन्हें तव धोग्घा जाई । ।
 जब पवना मम कौ गहै, करै शब्द उचार ।
 उलट जबै सूधा करै, जब देखै सोई सार । ।
 निज मन सतगुरू पास, जिहि पाए नौनिध मिलै ।
 जग तज रहौ निरास, सत्त शब्द कौ खोज ले । ।
 सत्त नाम यही तत्व सारा । अगम ज्ञान का कूची तारा । ।
 हूँकारा धुनि जहां द्वा होई । तहां वा राखौ सुरत समोई । ।
 मूल नाम का कहूँ विशेषा । ज्ञान नैन तै विरले पेखा । ।
 जिहि कर कूची ताला होई । गढ़ का भेद लग्घैगा सोई । ।
 सतगुरू मिलैं तौ भेद बतावैं । भव जल माहीं बहुरि न आवैं । ।
 सुनिये ऐसा अगम संदेश । सतगुरू मिलै तौ मिटै अंदेश । ।
 गुरू की सीख परतीत जु करई । जम जिहि देख बहुत ही डरई । ।
 यह सतगुरू उपदेश है, जो मानै परतीत ।
 करम भरम सब त्याग कै, चलै सु भव जल जीत । ।
 गहै शब्द का मूल, बूंद समोइ समान है ।
 सूक्ष्म है स्थूल, बीज वृक्ष विस्तार है । ।
 अलग्घै लग्घै अलग्घ है सोई । शब्द सुरत सम राख बिलोई । ।
 सुरत सनेही नामहि चीन्हें । निस दिन रहै तास लौ लीनै । ।
 तातै ज्ञानी दिष्ट पसारै । आपहि अपना रूप निहारै । ।
 जिहि समदिष्ट रहै अनुरागी । आसन माहि होय बैरागी । ।
 ऐसी सुरत रहै लौ लाई । निद्रा छुधा सब मिट जाई । ।
 आद अगम की महिमा भाग्यै । विषिया तज अमृत फल चाग्यै । ।
 मन थकि ब्रह्म होय जिय ताका । देख सुनै मारग य बांका । ।
 पिरथी आव तेज तहां नाहीं, नहीं वायु आकाश ।
 अलल पंक्ष तहां हुइ रहै, सत्त नाम विश्वास । ।
 जहां छांह नहीं धूप, तहां निरगुन सा रूप है ।
 दैषौ विमल स्वरूप, जनम सुफल कर जानिये । ।
 जो कोई भव जल पारा चाहै । खेवटिया सै प्रीत निवाहै । ।
 भवसागर ऐसा अनसूझा । बार न पार शरीर न बूझा । ।
 निज औगाह पार जो होई । खेवट महिमा जानै कोई । ।
 तीन लोक के पार ठिकाना । आदि पुरुष का है स्थाना । ।
 तहां वहां है अवगत देशा । जम का जहां नहीं परवेशा । ।
 जो वहां जाय अमर सो होई । जरा मरन सै वंचै सोई । ।

तीन लोक कौ वेद बख्रानै । चौथा उन मुन भेद न जानै । ।
 सतगुरु का एक देश है, जो बसि जानै कोय ।
 कागा हंस होत है, जात वरन कुल खोय । ।
 सतगुरु निज सत भाव, ऐसा भाव बतावई ।
 तजौ काग की कांव, हंस दिशा कौ धावई । ।
 सत्त हित हंस हिरवर होई । मान सरोवर पहुँचा सोई । ।
 वरन पलट कर होय अबरना । पावै निज सतगुरु की शरना । ।
 जीव दिसा बिसरै जेह केरी । काटै करम भरम की बेंडी । ।
 देह धरै अंन दुख नहीं सहई । सुख सागर सुख बासा रहई । ।
 हंसन संग करै जौ कृड़ा । पांच तत्व का तजै सरीरा । ।
 विमल होय जो हंस की देही । सदा रहै सो शब्द सनेही । ।
 मिटै विदेश की आशा तब ही । पहुँचे जाय देश में जबही । ।
 हंस उदास जो शब्द सौ, क्यों कहिये कुल हंस ।
 जिहि परतीत है शब्द की, सो सुकृत कुल वंस । ।
 महिमा अगम अपार, ताहि अगोचर जानियै ।
 सोई है तत्व सार, जो सतगुरु दाया करै । ।
 ओंकार को सब कोई जानै । ताते पंडित वेद बख्रानै । ।
 निराकार ते भया अकारा । एक बूंद सागर विस्तारा । ।
 सूक्ष्म से जो भया स्थूला । ऐसा प्रकटा सकल का मूला । ।
 जिहि मध्ये निह तत्व का बासा । विमल स्वरूप सकल प्रकाशा । ।
 तीन लोक में रहा समोई । चौथे की गम लग्यै न कोई । ।
 पांच तत्व गुन तीन सौ राचा । जहां लग सुर नर मुनि सब पांचा । ।
 शब्द परख जो सतगुरु पावै । बहुर न जौनी संकट आवे । ।
 त्रिविध रूप कर जग ठगा, चौथा अपन कहाइ ।
 सत्त शब्द जाने बिना, सब जग गया नसाइ । ।
 मूल तजा गहि डार, सुर नर मुनि गण देवता ।
 भूल रहा संसार, त्रिविध रूप पाखंड में । ।
 नाम ही कौ कोई विरला जानै । जिहि ते आवा गवन न आनै । ।
 नाम ही ते जग का विस्तारा । बिना नाम नहीं उत्तरै पारा । ।
 जितने पंडित विद्या धरई । नाम बिना जीव नरकै परई । ।
 वेद कतेव धरौ एक ओरा । तन मन अरपौ नाम निहोरा । ।
 पट तर नाम नहीं कुछु ऐहै । बड़ भागी कोई नामै पैहै । ।
 नाम बिना सब परलै होई । सुर नर मुनि सब गये विगोई । ।
 नाम सार जो है जग माहीं । नाम बिहूना आवै जाई । ।
 नाम जपौ धन धाम तज, नर नारी सब कोइ ।
 अभिचल नाम जो मन बसै, तौ अभिचल देही होय । ।

सत्त नाम विश्वास, कर्म भर्म सब पर हरै ।
सतगुरू पुजवै आस, सो निरास पद पावई । ।
मूल नाम नहीं लागै आई । फिर फिर जग परलै लिपटाई । ।
देह धरै बहु कर्म कमावै । कैसे अवागमन नसावै । ।
तीरथ बरत और नेम अचारा । यह में सब भूला संसारा । ।
पूज पाषान न आतम जाना । तन छूटै पाषान समाना । ।
जंत्र मंत्र सिख कै उरझाई । नाटक चेटक भूल भुलाई । ।
नाम बिना कैसे कोई तिरई । बिन सतगुरू क्यों पार उतरई । ।
बाजी में संसार भुलाना । सतगुरू मिल नहीं नाम समाना । ।
त्रिगुन रूप की भगत में, फिर फिर धरै शरीर ।
बिना नाम नहीं मुक्ति है, अस कथ कहैं सत धीर । ।
भरमै जनम अनंत, करम करै दुख सुख भरै ।
सोई खोजौ संत, ताहि मिले जीव काज होय । ।
सत्त नाम एक अक्षर सोई । जिहि के सुमरन बहु सुख होई । ।
अक्षर में निह अक्षर होई । ज्ञानी होय सो बूझै कोई । ।
अक्षर पंडित भेद बखानै । निहि अक्षर का भेद न जानै । ।
निहि अक्षर है नाम की डोरी । जिह ते जम फंदा सब तोरी । ।
जग बूझै जो रश्ना होई । बिन रश्ना गुन गावै सोई । ।
कथा होय तौ देहूँ सुनाई । अकथ कथा सतगुरू पै पाई । ।
ज्ञानी होय सो ज्ञान बिवेषै । अक्षर में निहि अक्षर देखै । ।
सुरता बकता सब मरे, मरम न पाया काहु ।
अकथ कथा सतगुरू कहैं, सुनौ संत सत भाउ । ।
अर्ध मूल है वेद, उर्ध मूल विस्तार सब ।
सतगुर कहैं जु भेद, बीज वस्तु पहिचानिये । ।
अनहद धुन सुन रूप है तेही । सत्त सुकृत का आसन जेही । ।
अगम चढ़ाई चीन्है कोई । धरते सुरत सु गगन समोई । ।
तारी दसौ दुआरै लागै । गुर प्रताप आतमा जागै । ।
तन मन की गत मत विसरावै । सर्ति वंत कोई सहज समावै । ।
धरती तज जब चढ़ै अकाशा । देखै झिल मिल विमल तमाशा । ।
अधर रूप ते नूर जु पैहै । गगन के मध्यांगन हुइ रैहैं । ।
बजर किबारी गुरू उद्यारै । मन थकि जाय बीज विस्तारै । ।
सहज सुन के अगम हैं, तीन लोक की ओर ।
तहां निशान बजावई, जहां शब्द घनघोर । ।
सुनियौ अगम संदेश, सकल निगम के ऊपरै ।
छूटै सब भर्म भेस, अगम निगम परवानिये । ।

अक्षर है यह आदि अनूपा । जिहि ते जग सब धरा सरूपा । ।
 लौ लावै निस दिन न विसरै । आदि अन्त के मध्य निहारै । ।
 मूल मंत्र के भेद जु बौलै । कूची ताला साधू खोलै । ।
 मूल जुहै सब मध्य रहाई । अनहद बानी अनभै गाई । ।
 मूल शब्द जो बोलै बानी । आदि अन्त मध्य सहदानी । ।
 मूल मंत्र सोई लखि पावै । जो सतगुरु से सुरत लगावै । ।
 सुरत सनेही सबै विचारै । सतगुरु ऊँचे चढ़ा पुकारै । ।
 सुरत सनेही हंस हैं, करैं विवेष विचार ।
 जैसे चुन पीपल का, चीन्हें रेत मंझार । ।
 मूल मंत्र सब माहि, बानी सो उजियार है ।
 तहां न धूप न छांह, निगम जु नित्त पुकारई । ।
 यह जग हैगा जम का देशा । नाम जपे सै मिटै अंदेशा । ।
 जग कह काल गरल परबानी । सतगुरु शब्द अमीरस बानी । ।
 जो तू सुष नहीं तकै शरीरा । अमृत पावै विष के तीरा । ।
 नेम अचार करम है जेता । राच रहे सब भूत परेता । ।
 निहचे सों जीव होय निचिंता । विन विश्वास मिटै नहीं मीता । ।
 सुरत देख तहां लिपटाई । कैसे मन का धोखा जाई । ।
 सुरत सनेही नाम समाना । और सकल जग मिथ्या जाना । ।
 झूठ आस संसार की, जिह लग जीव हड़ाइ ।
 सुरत नाम निरास पद, सो सत लोक समाई । ।
 कर्म काल बस जीव, भरम भरम सब पचमुआ ।
 नाम अमीरस पींव, काहे कौ विष संचरै । ।
 उनमुन रहै अमीरस चाखै । मन पवना कौ अंतर राखै । ।
 मन पवना पताल प्यासा । नीझर झरै रहत रस बासा । ।
 आपा मेट कै तारी लावै । दसमें द्वार की जब सुधि पावै । ।
 अंध कूप दामिन प्रकाशा । यौं गगन मंडल में शब्द निवासा । ।
 अगम पंथ चहुँ ओरा बंका । पांजी द्वार अगम जहां झंका । ।
 गगन मंडल में आसन माढ़ै । उलट चोर कुतवालै डाढ़ै । ।
 मंडप चहुँ दिश खुले किवारै । दया भाव सै काज पधारे । ।
 निस वासर जो सम करै, तिमर हुआ प्रकाश ।
 आदि ब्रह्म जहां देखि कै, पूजै जन की आश । ।
 सतगुरु के प्रताप, सहज समाध लगावई ।
 रीझै मन सुन नांद, सतगुरु का उपदेश है । ।
 एक सकल है ब्रह्म निनारा । जिन यह घट घट खेल पसारा । ।
 शब्द एक और एकै रूपा । जिह ते उपजा सकल सरूपा । ।
 दूजा भाव न मन पतियाई । एक मांहि मन रहा समाई । ।

एकहि ते जग भया अनंता । तासै एक का आदि न अंता । ।
सतगुरु मिलैं तौ भेद बतावैं । बांह पकड़ घर लै पहुँचावैं । ।
जग में एक न पूजै जोई । दुविधा में सब गया विगोई । ।
एकै टेक करै जो आशा । मन विच सत शब्द विश्वासा । ।
एक रूप एकै वरन, एकै सम सब भेस ।
दुविधा सकल विसार कै, ऐसा अगम संदेश । ।
सत्त नाम है एक, जो सतगुरु मिल भांपई ।
होय एक की टेक, मुक्ति नहीं परतीत विन । ।
कथा ज्ञान अखरावति सारा । बावन अक्षर का विस्तारा । ।
नौ उपदेश भेद अस भांषा । नेति नेति से ऊपर राख्वा । ।
इक इक अक्षर की सहदानी । वेद का मूल कथा कही बानी । ।
आदि एक सों सुरत लगावै । भव जल तिरत वार नहीं लावै । ।
सत्त लोक का अगम संदेशा । सो सतगुरु का है उपदेशा । ।
अकथ कथा अखरावति भांषी । वेद कतेव के ऊपर राखी । ।
अखरावति पढ़ पढ़ भेद बखानै । सो सतगुरु की महिमा जानै । ।
विन अक्षर सब झूठ है, अक्षर सब में सार ।
अक्षर भेद जो पावई, सोई हंस हमार । ।

सतगुरु कहैं डर नाहिं, सत्त बचन परतीत कर ।
हंसराज की बांह, निश्चय सों भव जल तिरै । ।

सीस गुरु को अरपि के, कीजै तत्व विचार ।
सतगुरु दया से मुक्ति फल, उतरै भव जल पार । ।

सतगुरु भूखा कोउ नहीं, सब घट एकही माल ।
परख सकें तो परख ले, ना परखे कंगाल । ।

हम वासी वा देश के, जहों जात वरन कुल नाही ।
शबद मिलावा होयगा, देह मिलावा नाही । ।

इति सतगुरु साहिब का अखरावति ग्रन्थ सम्पूर्ण

सतनाम साठा

सतगुरू चरण नवाइके, पग बन्दौ कर जोर ।
कृपा करहू सब सन्त जन, आय बैठि यह ठौर । ।

बन्दौं परथम सब गुरून के चरणा । सतनाम जेही देवै वरणा । ।
सतनाम जीवन व्यवहारा । सत्य अहिंसा अमृतधारा । ।
प्रेम की बीज मधुर रस वाणी । सतनाम यह खेत है जानी । ।
सुनहु सन्त यहि वाणी विचारो । सच पतियाय तबहिं सिर धारो । ।
मन के खेत प्रेम के बीजा । सुरति लगाई सतनाम को सींचा । ।
जैसे बीज होहिं फल वैसा । सतनाम नहीं कछु अन्देशा । ।
आपै वोऔ आपै काटो । कडुआ मीठा खुद ही चाटो । ।
सन्त महन्त सुनौ मन लागे । बुद्धि विवेक ज्ञान तब जागे । ।

कस्तुरी कुण्डली बसै, मृग दूढ़े वन माहिं ।
सत् चेतन घट घट बसै, दुनियाँ देखै नाहिं । ।

परथम सीढ़ी गिरौदपुरी धामा । जनमें जहाँ गुरू सतनामा । ।
दूसर सीढ़ी छाता पहाड़ी । उपजै ज्ञान सतनाम की खाड़ी । ।
तीसर सीढ़ी ज्ञान के गंगा । बहत रहे जोग्य नदी संगी । ।
चौथे सीढ़ी चढ़ै जैतग्रामा । मिटै दोष मद मोह अरु कामा । ।
पंचम सीढ़ी पंच परसादा । जहाँ रहे गुरू रावटी साधा । । (सत्संग)
षष्ठम सीढ़ी बन्दौं गुरूद्वारा । जहाँ रहे गुरू ज्ञान भण्डारा । ।
सप्तम सीढ़ी सब संत के वाणी । काटै मम अंधकार अज्ञानी । ।
सात सीढ़ी सात परवाना । सिरपुर सफुरा बुद्धि खजाना । ।
एक नाम एक है ध्याना । सुरिति लगाई करौ पहिचाना । ।
जो यह पढ़ै गुनै मन लागे । मिटै दोष मन कष्ट सब भागे । ।

बन्दौं सकल समाज को, जेहि जाने सतनाम ।
पग पग राह बताइके, तजै क्रोध अरु काम । ।

अब करुं वर्णन गुरू गोसाई । जेहि सतनाम पन्थ चलवाई । ।
मंहगू अमरौतिन दोउ नामा । बसत रहय गिरौदपुरी धामा । ।
निशि बासर कारज को जावै । संध्या होत दोऊ घर आवै । ।
अमरौतिन सकल गुणखानी । काम काज को चतुर शयानी । ।

एक दिन जात रहय वो बारी । भूखा सन्त मिलै तिन्ह चारी । ।
खाना खिलाय दियो तिन्ह सन्तन । भयो प्रसन्न तबहिं सब सन्तन । ।
दियो बताय मंहगू के पासा । मन प्रसन्न भये दर्शन अभिलाषा । ।
कारज छाड़ि मिलन को धाये । सन्तन देखि मनहिं हरषाये । ।

ज्ञान सुनत हर्षित भये, निज मन करत विचार ।
सब सन्तन संग मिलि के, प्रेम अगाध अपार । ।

यहि विधि कछुक दिवस तहं बीता । पुत्र रतन अमरौतिन दीता । ।
नाम घसिया घासीदास कहावा । सतखोजी सतपुरुष कहावा । ।
मातृ शोक बचपन से पाये । गाय दूध पीय जीवन पाये । ।
घासीदास अति गुणखानी । तासु कथा नहीं जाय बखानी । ।
काम काज करिवे को आतुर । मिलनसार गुणी अति चातुर । ।
काम करत कबहूँ नहीं थाके । नित प्रति प्रेम सखा संग राखे । ।
लोभ लालच नहीं कबहु सताये । जो कछु मिलै संग मिल खाये । ।
संग सखा मिली खेलन जावे । सत मारग को नित समझावे । ।
चोरी हिन्सा मति करो भाई । परधन लालच बड़ी बुराई । ।
एक दिन सखा सर्प डस लीन्हा । दवा लगाय तुरत ठीक कीन्हा । ।
साहस देखि सराहन लागे । घासी मन अन्तर नहीं जागे । ।
कछुक बरष बीते यहि भौंति । सत के खोज रहय दिन राती । ।

अंजोरी के घर गये, सिरपुर ग्राम प्रधान ।
सुन्दर सुशील वधु पाइके, मंहगू किये फरमान । ।

सफूरा अति सुशील सुकुमारी । बुद्धि खजाना गुणवती नारी । ।
सिरपुर महानदी के तीरा । बौद्ध बिहार ज्ञान गम्भीरा । ।
बौद्ध भिक्षु तहाँ करे निवासा । आनन्द प्रभु करे जहाँ वासा । ।
दक्षिण कोशल की रजधानी । तहाँ रहे नागार्जुन महाज्ञानी । ।
तासु प्रभाव सफूरा मन भाये । ज्ञानवती सब गुण समाये । ।
घासीदास तिन्ह ब्याह रचावा । सत् पुरुष पाय तासु मन भावा । ।
घासीदास मन भये प्रसन्ना । तासु प्रभाव जाय नहीं बरना । ।
चार पुत्र एक पुत्री पाये । बालक अमर आगरदास कहाये । ।
सुभद्रा निज पुत्री के नामा । सुन्दर सुशील तासु गुण धामा । ।

मराठा ब्राह्मण राज में, दुखिया सब समाज ।
आतंक का पर्याय है, केहि विधि होइहैं काज । ।

रूढ़िवाद भयानक भारी । चहुँ दिशि छाये घोर अंधियारी ।
भरम भूत भय मन भरमाया । अन्धविश्वास समुझ नहीं पाया । ।
मानव मानव भेद कराये । घृणा द्वेष मद मोह उपजाये । ।
सकल समाज किये अज्ञानी । विप्र बुद्धि कोउ नहीं जानी । ।
महिपति कहत जगत भरमाया । यही विधि मुख ब्राह्मण जनमाया । ।
पूजिय विप्र शील गुण हीना । शूद्र न गुण गन ज्ञान प्रवीना । ।
असत जानी गुरु व्याकुल भयऊ । सत खोजन को चिंतित रहऊ ।
सोचत रहे गुरु दिन राती । मन अंधियार दिया बिन बाती । ।

सत् खोजन को गुरु गये, पहुंचे छाता पहार ।
ध्यान मग्न बैठे रहे, भोगत कष्ट अपार । ।

जंगल बीच बहय एक झरना । प्यास बुझावे सब दुख हरना । ।
जोग्र नदी तट करै अस्नाना । वापस जाय करै नित ध्याना । ।
कछु दिन बति गये यहि भौंति । औंरा धौंरा पेंड़ सुहाति । ।
सत असत् बीच छिड़े लड़ाई । कैसे भेद करौं मैं भाई । ।
सत् की उपज सत् से होई । असत् से सत् कभू नहीं होई । ।
काम क्रोध मद लोभ परमाना । असत् विचार उपजै अज्ञाना । ।
सत् है दया शील अनुमाना । करुणा क्षमा प्रेम तब जाना । ।
वाणी मधुर जस अमृतवाणी । सतनाम तिन्ह दिये बखानी । ।

सांच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप ।
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप । ।

भयानक रोचक काल्पनिक जगत में,
भय भ्रम शब्द का छाया घन घोर था ।
भादों अमावस सी रात, जहाँ कोई पथ सूझे नहीं,
द्वन्द अन्तर्द्वन्द मन, फैला चारों ओर था । ।
तपसी सुभट कोई, सतखोजी बाबा वहाँ,
तासु मन पल पल सत् में विभोर था ।
लोक परलोक बीच सत् को दूढत फिरे,
निर्णय सजीव एक सत् ही अन्जोर था । ।
प्रकृति के ओट माही कोई परलोक नाही,
चारों ओर रमणीय प्रकृति का गोद था ।
भय भ्रम छूटि गयो मन उजियारा भयो,

सत् के अंजोर से अंजोर चारों ओर था । ।
एक ही नाम और एक ही धाम जहाँ,
चेतन पुरुष बैठ करे विश्राम है ।
ताही को जगाओ निज घट को मनाओ,
सतनाम सार यही नाम सतनाम है । ।

ऊँच नीच के भेद को, पल में दियो मिटाय ।
मनखे मनखे सब एक है, जग को दियो बताय । ।

एक बार गुरु दियेउ लग्वाई । ब्राह्मण बुद्धि तजहूं रे भाई । ।
ब्राह्मण बुद्धि नहीं कल्याना । छल प्रपंच कपटी तिन्ह जाना । ।
बड़ सो पापी आहि गुमानी । पाखण्ड रूप छलेऊ नर जानी । ।
वावन रूप छलेऊ बलि राजा । ब्राह्मण कीन्ह कौन को काजा । ।
ब्राह्मण ही सब कीन्हीं चोरी । ब्राह्मण ही को लागत खोरी । ।
ब्राह्मण कीन्हीं वेद पुराना । कैसेहु कै मोहि मानुष जाना । ।
एक से ब्रह्मै पन्थ चलाया । एक से हंस गोपालहिं गाया । ।
एक से शंभु पन्थ चलाया । एक से भूत प्रेत मन लाया । ।

छल प्रपंच पाखण्ड का, नाम है ब्राह्मणवाद ।
चार वरण उपजाइके, छलियो मानुष जात ।

बूझहू तुम निज मति अनुसार । ऐसा लोक वेद व्यवहार । ।
एक से पूजा जैनि विचारा । एक से निहुरि निमाज गुजारा । ।
नाना रूप वर्ण एक कीन्हा । चार वर्ण वै काहू न चीन्हा । ।
नष्ट गये कर्ता नहीं चीन्हा । नष्ट गये औरहि मन दीन्हा । ।
नष्ट गये जिन्ह वेद बखाना । वेद पढ़े पर भेद न जाना । ।
कोऊ काहू हटा न माना । झूठा खसम सद्गुरु नहीं जाना । ।
तन मन भजि रहु मोरे भक्ता । धन्य गुरु सत्य है वक्ता । ।
आपुहि देव आपु है पॉति । आपुहि कुल आपु है जाति । ।
सर्व भूत संसार निवासी । आपुहि खसम आपु सुखवासी । ।
कहत मोहि भयल युग चारी । काके आगे कहौं पुकारि । ।

सांचहि कोई माने नहीं, झूठहि के संग जाय ।
झूठहि झूठा मिलि रहया, बेड़ा गरक कराय । ।

एकै पवन एकै पानी । ऊँच नीच के मध्य न जानी । ।
जल का धरम शीत बरसावे । अमीर गरीब में भेद न पावे । ।
पवन धरम संग लेइ बहाई । जाति पाति नहीं जाने भाई । ।
आगुन धरम सुनहु मन लागे । जे कछु मिलै जलावन लागे । ।
धरती धरम एक है भाई । सब मिली संग रहौ रे भाई । ।
जलचर थलचर नभचर नाना । सब को जानै एक समाना । ।
एक आकाश तरु ये सब रहई । भेद न जानै सन्त अस कहई । ।
नर किन्नर पशु पक्षी न जाना । भेद कहाँ है सुनहुँ सुजाना । ।

भय अरु भ्रम उपजाइके, कियो विभाजित भात । ।
निज स्वारथ के कारणे, बांटे मानुष जात । ।

वेद बखानत सुनहुँ सब सन्ता । यह भ्रम भेद होवय अन्ता । ।
मुख से ब्राह्मण पैदा कीन्हा । केहि विधि मुख को योनी चीन्हा ।
मुख से उल्टी होत है भाई । कैसे ब्राह्मण को जनमाई । ।
भुजा से कैसे क्षत्रिय जनमाये । मूँछ दिखाय अति गरब कराये । ।
उदर ते बनिया को जनमाये । पेट दिखावत बाहर आये । ।
नहीं देख्रा ऐसी कोई नारी । जेहि जनमाये कान से बारी । ।
अस दुर्दशा न देखी जाई । नारी जाति की कस करौं बुराई । ।
सब अचरज भारत बीच होई । अन्य देश नहीं जानै कोई । ।
सब मानुष जनमै एक भाँति । फिर क्यों वेद किया कुजाति । ।

में तोह पूछौं पण्डिता, शब्द बड़ा की जीव ।
जो जाने सतनाम को, यही शब्द की नीव । ।
एक अचम्भा औरे जानो । चारमूर्खी ब्रह्मा के मानो । ।
अजब कहानी ब्रह्मा के भाई । निज बेटी संग किया विहाई । ।
नारद नाम ब्रह्मा के बेटा । चारों युग को दियो लपेटा । ।
लाख बरष युग उमर बताई । घूमत फिरत न नारद बुढ़ाई । ।
एक से एक अजूबा भाई । अस देवतन की भीड़ बढ़ाई । ।
अष्टभुजा चतुर्भुज षठवदना । लगे भयानक दस शिर वरना । ।
एक ते एक भयानक करनी । जासु कथा नहीं जाये वरनी । ।
रूप विकराल भयानक भारी । परपत्नि सोहे किसन मुरारी । ।
रास रचाय गोपियन के संगी । सबको किन्ह यमुना तट नंगा । ।
धन्य प्रभु धन्य अस ईशा । मन भरमावे जाके किस्सा । ।
असत् वात सब सत् वतलाये । यहि विधि मन भय भ्रम समाये । ।
पढ़ना पढ़ो धरो जनि गोई । नहिं तो निश्चय गाय विगोई । ।

निज घट करौ विचारि तुम, ये सब असत् है बात ।
सत् काटे ब्रह्मजाल को, जस तारा परभात । ।

जाके मन करे असत् प्रवेशा । भागै शक्ति नहीं कछु अन्देशा । ।
यही भ्रम से उपजै भय भाई । अदभूत आश्चर्य चमत्कार दिख्राई । ।
यही को ब्रह्मफांस तुम जानो । जेहिके फन्दा बचै न मानो । ।
भय बिना भक्ति न होवय भाई । कह गये तुलसीदास गोसाई । ।
पाप पुण्य लोक परलोका । स्वर्ग नरक भय ब्यापै शोका । ।
यहि कारण मन भय उपजाया । विप्र बुद्धि समुझ नहि पाया । ।
मन भूलै पथ बीच बजारा । भटकत रहै तहाँ अंधियारा । ।
कोई वहाँ नहीं रस्ता सूझै । भय भ्रम बीच न रस्ता बूझै । ।
काज करन आलस उपजाये । सत मारग ते मन भरमाये । ।
काम क्रोध मोह सब जागे । मद माया तृष्णा संग लागे । ।
यह सब दुख के कारण जानो । असत् निवास करहिं मन मानो । ।

मन अमधियारा होत ही, जग अमधियारा होय ।
मन उजियारा होत ही, जग उजियारा होय । ।

एक चमत्कार गुरु ने कीन्हा । सतनाम हम सबको दीन्हा । ।
हम मति मन्द समुझ नहीं पाये । सतनाम गुरु अलग्ग जगाये । ।
सतनाम एहि अमृत बानी । निज मन चख्रो तबहि तुम जानी । ।
जहिके मन करे सत् प्रवेशा । मिटै दोष सब भागै कलेशा । ।
भय अरु भ्रम न मन में आवे । सतनाम जेहि मन में ध्यावे । ।
काम क्रोध मद मोह सब भागे । माया तृष्णा पास न लागे । ।
करुणा शील दया उपजावे । सहनशील मन शान्ति लावे । ।
क्षमा दान नित मन उपजावे । सत्य अहिंसा मारग पावे । ।
साहस उपजै पराक्रम जागे । आलस निद्रा तुरतै भागे । ।
सतपुरुष नहीं होय अज्ञानी । तासु अधर नित अमृत बानी । ।
यहि विधि गुरून दिया सन्देशा । सिद्धि होत नही कछु अन्देशा । ।

सतनाम ही सार है, जीवन का व्यवहार ।
सत चेतन जेहि घट वसै उपजै शक्ति अपार । ।

बालकदास के अमृत बानी । पाके भाख्रा राखे पानी । ।
चूहय अमृत के ओरवाती । मगन होय भुइया के छाती । ।
माथ मुकुट गर कण्ठी माला । हाथी संग संभाले भाला । ।

कमरपटा संग बांध कटारी । राजा गुरु वीर बलिहारी । ।
वीर गुरु बलिदानी चोला । जेखर बचन अगिन के गोला । ।
जिहली बख्तर ओड़न खाड़ा । रोम रोम विच्छी के आड़ा । ।
ढाल भजन के नाम के तेगा । ओरी ओरी पचासी ठेंगा । ।
धन्य धन्य ओ गुरु गोसाई । जेखर परन पहार के नाई । ।
हीरामनी रतन के आभा । परबल पुरुष परवारय भाखा । ।
चेहरा चंडी दावय पाती । फीको लाख दिया के बाती । ।
समर नदी म लहू बोहावय । तामे निर्भय वीर नहावय । ।
डुबकी लय सागर कस पानी । ओही पुरुष के सफल जवानी । ।
जो नई वीरगति ला पाय । ओखर जवानी विरथा जाय । ।
देख लजावय कोटिन काम । साहेब सतगुरु सतनाम । ।

धन्य धन्य गुरु बालक, दियो सतनाम उबार ।
धन्य धन्य सब सन्त को सतज्ञान है अपरम्पार । ।

अलख नाम के अगहर नेती । करय रावटी सेती मेती । ।
सतनाम के सार बतावय । हारे हंसा नींद जगावय । ।
कपटी मन के मुँह झुझवावय । बैरी के छाती गुंगवावय । ।
सेत खंभ लागे चौपारा । शब्द विहंगम करय पुकारा । ।
नाम जरय अंगरा के नाई । सकल जगत के कलुष मिटाई । ।
ब्राहि ब्राहि भये तप के ताप । तेज संभारे अपने आप । ।
अगन लगे नभ धुंआ छाय । जीव जगत ले देय भरमाय । ।
सरग निसैनी लेखर नाम । डोले पवन विजय के खाम । ।
बांधे गांठ धरे हे नाम । साहेब सतगुरु सतनाम । ।

गुरु वन्दना

धन्य है गुरु... मेरे धन्य है गुरु ।
धन्य है गुरु... मेरे धन्य है गुरु... ।
धन्य.. है गुरु... मेरे धन्य है गुरु... ।
जिसने किया सतनाम को शुरू ।
सतनाम को शुरू सतनाम को शुरू ।
जिसने किया सतनाम को शुरू ।
माया नाम मोह की बेटी । पिता लोभ संग लिये लपेटी । ।
उपजी माया मन भरमाये । आशा तृष्णा संग धरि लाये । ।
काम क्रोध मद लोभ जगाये । राग द्वेष घृणा उपजाये । ।

लिपटी माया मन नहीं बूझे । मन भरमाय दिशा नहीं सूझे । ।
बीच भंवर मन डोलन लागे । समुझि न पावे इत उत भागे । ।
सतरंगी यह जग है माया । सात रंग में मोह समाया । ।
कनक कामिनी कंचन काया । मरि मरि मिटै न मन की माया । ।
सतनाम जब मन में आये । सारे दोष तुरत मिटी जाये । ।
सत है गुरू... मेरे सत है गुरू ।
सत है गुरू... मेरे सत है गुरू... ।
सत है गुरू... मेरे सत है गुरू... ।
ज्ञान का सागर दिया बहाये । प्रेम दया करुणा उपजाये । ।
काटा गुरू ने मन का फन्दा । सतनाम लेइ मन होय आनन्दा ।
सब रंग मिली होवै इक रंगा । जस सतनाम का है सतसंगा ।
सब रंगों का भेद मिटाया । श्वेत ध्वजा जग में फहराया । ।
सब रंगों का एक है रंगा । श्वेत ध्वजा लावै मन चंगा । ।
ज्ञान वैराग्य यहि मन उपजावे । क्षमा शील करुणा मन भावे ।
सब नदी मिली सागर कहलावे । सतनाम यही भाँति सुहावे ।
जय हो गुरू... मेरे जय हो गुरू...
जय हो गुरू... मेरे जय हो गुरू...
जय हो गुरू... मेरे जय हो गुरू...

कवीर साहब के कुछ अनमोल शब्द

रहना नहीं देस बिराना है ।
यह संसार कागज की पुड़िया, बूंद पड़े घुल जाना है ।
यह संसार कांटा की बाड़ी उलझ - पुलझ मरि जाना है । ।
यह संसार झाड़ और झांखर, आग लगे जरि जाना है ।
घासी कहत सुनो भाई सन्तों, सतगुरू नाम ठिकाना है । ।

आशा जीवे जग मरै लोग मरे मरि जाइ ।
सोइ मूवै धन संचते सो ऊवरै जे खाइ । ।
कवीर मन फूल्या फिरै करता हूँ मैं धर्म ।
कोटि कर्म सिर ले चल्या चेत न देखै भ्रम । ।
अगम अगोचर गमि नहीं जहाँ जगमगे जोति ।
जहाँ कबीरा बंदगी पाप पुण्य नहीं होति । ।
करम करीमां लिखि रह्या, अब कछु लिखा न जाइ ।
मासा घटै न तिल बढै जो कोटिक करै उपाइ । ।
धोखज तो हम अंगिया यहु डर नाही मुझ ।

बहिस्त न मेरे चाहिए बांझ पियारे तुझ । ।
जाको जेता निरमया ताको तेता होइ ।
रत्ति घटै न तिल बढै जो सिर कूटै कोइ । ।
कवीर किया कछु होत न अनकिया सब होय ।
जे किया कछु होत न तो करता औरे कोय । ।
ऊँचे कुल का जनमिया करनी ऊँच न होय ।
सुबरन कलस सुरा भरा साधू निन्दै सोय । ।
कवीर कुल तौ सो भला जिहि कुल उपजै दास ।
जिहि कुल दास न उपजै सो कुल ओक पलास । ।
जो तू बाँभन बाँभनी जाया । आनि बाट है काहे न आया ।
काहे को कीजै पाण्डे छोट विचारा । छोटै से उपजै संसारा ।
हमारे कैसे लोहू तुम्हारे कैसे दूध । तुम कैसे ब्राह्मण पाण्डे हम कैसे शूद ।

अरे इन दोऊ राह न पाई
हिन्दू अपनी करै बड़ाई गागर छुवन देइ ।
वेश्या के घर पांव पलोटै कहौ रही हिन्दुआई । ।
मुसलमान के पीर औलिया मुरगा मुरगी खाई ।
खाला केरी बेटी ब्याहै घरहिं में करै सगाई । ।
एके बूद एक मलमूतरा एक चाम एक गूदा ।
एकै जाति से सब उत्पना को वामन को शूदा । ।
पंडित भूले पढ़ि गुनि वेदा । आपु अपनपौ जान न भेदा । ।
अति गुन गरब करै अधिकारि । अधिके गरबि न होइ भलाई । ।
तू बाह्मन में कांसी के जोलाहा चीन्हि न मोइ गियांनां ।
तैं सब मांगे भूपति राजा मोरे सदगुरू धियाना । ।
साखत बांभन न मिलै वण्णव मिलै चंडाल ।
अंक माल लै भेटिये मानो मिले गोपाल । ।
पाहन केरा पूतला करि पूजें करतार ।
इहि भरोसे जे रहै ते डुबे मझधार । ।